Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X | Impact Factor
Peer Reviewed | Quarterly
Vol.8 No.13 | Apr-May-June2023

सारांश

Dr. Jaykar S. Macwan

आज संपूर्ण मानवजाति विनाश के किनारे पर खड़ी है। मनुष्य मनुष्य के बीच दीवारें खड़ी हो रही है। विश्व की भूमिका मनुष्य के खून से रक्त-रंजित हो रही है। संपूर्ण विश्व में शस्त्रों की दौड़ हो रही है। जैसे की इन्सान मरने के लिए तत्पर हुआ है। जिस प्रकार विभिन्न राष्ट्र विशाल पूँजि सैन्य की तैयारी के पीछे खर्च रहे है जैसे कि मरने के लिए बजट तैयार हो रहा है। आज विश्व में द्ररिद्रता, बस्ती विस्फोट विश्व युद्धों का भय, पर्यावरणीय असमतुला और अकेलापन जैसी अनेक समस्याएँ एक या दूसरे प्रकार से हिंसा के साथ जुड़ी हुई है। जबकि दूसरी और विश्वशांति के दंभ शुक्रपाठ होते रहते है।

किसी कविने सच ही कहा है।

" यहाँ क्या करे गाँधी ?

देश पर हिंसा की कैसी फैल जाती आंधी ?

महावीर और बुद्ध रो रहे है, से रहे हैं महात्मा गांधी।"

इस स्थिति में शिक्षा के द्वारा शांति यही सर्वोतम उपाय है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य के मन और हृदय को परिपक्व करना ही होगा ।

शांति यानि-

→ मान और मोह का नाश ।

→ आसक्ति से मुक्ति ।

→ महत्वकांक्षाओं का त्याग

→ सुख-दुःखरुपी द्रन्द्र में से मुक्ति

मनुष्य इस प्रकार की स्थिति प्राप्त करे तो उसे शांति मिल सकती है । शांति के लिए शिक्षा अर्थात् इस प्रकार की शिक्षा के जिसके द्वारा मनुष्य दुसरों को हानि पहुँचाए बिना खुद जी सके और दूसरों को जीने के लिए प्रेरित कर सके ऐसी शिक्षा ।

विश्वबंधुत्व, भातृभाव, संप और सहकार की भावना की मूर्त करके विभिन्न जातियों के बीच बड़ी बनी हुई धर्म, कोम, जाति, वर्ग की दिवारों को दूर करने के लिए शांति शिक्षा की आवश्यकता है। छात्रों की शिक्षा द्वारा शांति, सद्भाव, मानवता, भातृभाव जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाए और उन्हें सभी प्रकार की जनून से दूर रखा जाए तो भविष्य में वयस्क नागरिक बनकर शांति का मूल्य जान सकेंगे ।

संकुचित, राष्ट्रवाद, आधिपत्य लालसा, आतंकवाद, कोमवाद, प्रतिवाद, सांप्रदायिकता, रंगदेष इत्यादि विश्वशांति के मार्ग के रोड़े है। शांति के लिए विभिन्न शालाकीय कार्यक्रमों के द्वारा जैसे कि अभ्यासक्रम और सहअभ्यासिक प्रवृतिओं द्वारा, अन्य उपायों द्वारा शांति का संदेश छा को दिया जा सकता है। अब हमारे संपूर्ण शिक्षा के क्रम में शांति के लिए जरूरी शिक्षा अनिवार्य रूप, से जोडनी होगी। जापान में पूर्व प्राथमिक कक्षा से ही शांति के शिक्षा के प्रावधान है। हम भी इसके लिए प्रयत्न करें।

❖ शांति शिक्षा : शालाकीय कार्यक्रम

❖ पूर्वपीठिका :-

आज संपूर्ण जगतमें शस्त्रों की दौड़ हो रही है। जैसे कि मनुष्य मरने को तत्पर हुआ है। जिस प्रकार विभिन्न देश विशाल पूँजि सैन्य तैयारी के लिए खर्च रहे है उस प्रकार मनुष्य जैसे मरने का बजट तैयार कर रहे हैं। जैसे कि, मनुष्य अपने आप धरती के जीवन को खत्म करने के कार्य को प्रमुख पसंदगी देने का निरधार करके बेठा है । विश्व इतिहास की एक आपात स्थिति से हमे सब गुजर रहे हैं। वर्तमान अंतरिक्ष और अनुयुग में विज्ञान और प्रौधोगिकीने अनेक आर्शीवाद दिए है। तो समस्याएँ भी पैदा की है। आज विश्व में दरिद्रता, बस्ती विस्फोट, विश्वयुद्धो का भय, पर्यावरणीय असमतुला और अकेलापन जैसी अनेक समस्याएँ मुँह फाड़कर खड़ी है। ये सभी समस्याएँ एक या दूसरे प्रकार से हिंसा के साथ संबद्ध है। आज जगत को हिंसा से भय है जबकि दूसरी ओर विश्वशांति के दंभी शुकपाठ होते रहते है।

कश्मीर में प्रतिदिन हिंसा की होली हो रही है और बेकसुर मनुष्यों से कश्मीर की स्वर्गभूमि नर्कभूमि बन रही है । देश में 'इशावाभ्यम् इदम् जगत का दिव्य संदेश सुनने को मिला उसी देश में आज मनुष्य मनुष्य के खून का प्यासा हुआ है किसी कवि ने सच ही कहा है

यहाँ क्या करे गाँधी १ देश पर हिंसा की कैसी
कैल जाती आंधी १
महावीर और बुद्ध रो रहे है और रो रहे है महात्मा गांधी"।

आज सं संपूर्ण विश्व युद्ध की अग्न ज्वालाओ में एक या दूसरे रूप से ढह रहा है। अमरिका के पास इतने विवाशक शस्त्र है कि वह निर्धार करें तो विश्व का ५० बार विनाश कर सकता है । एक ओर विश्व की दरिद्र जनता दाना-पानी के बिना तड़प रही है, भूखमरी के कारण मनुष्य आत्महत्या कर रहें है । तब दूसरी और महासभाएँ शांतिमंत्र के दंभ के पीछे विश्व को विनाश की ओर धकेल रही हैं। इस स्थिति में शिक्षा के द्वारा शांति यही एक सर्वोतम उपाय है। शिक्षा के द्वारा मन और ह्रदय को मनुष्य कल्याण के लिए परिपक्व करना होगा । उसे मनुष्य की अमूल्य जीवन का मूल्य समझाना होगा । और संपूर्ण मनुष्य जाति के लिए शांति के सर्जन के लिए अपने आप को मानव कल्याण के लिए न्योछावर करना होगा । शालाकीय कार्यक्रमों द्वारा छात्रो में इस चेतना को जगा सकते है। कवि श्री उमाशंकर ने कहा है कि

"प्रभु! मेरी तरह, तपकर, धरती की भांति सर्जना,
निचोड़कर अंधेरा अमर रसज्योति जगाना ।"

गंगोत्री ।

❖ शांति के लिए शिक्षा की परिभाषा :

Peace is a state of mind, शांति मन का दृष्टिकीण है। शांति की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती। किन्तु श्रीमद् भगवद गीता के व्दितीय अध्याय में व्यक्ति शांति कब महसूस कर सकता है यह बात अच्छी तरह बताई गई है।

विहाय का मान यः सर्वान् पुमाश्चरति निस्पृह :
निर्ममा निरहंवा र: स: शान्ति प्रधिगच्छति । २/७२

जो पुरुष (व्यक्ति) सभी कामनाओं या इच्छाओं का त्याग करता है, जो इरछा रहित है, जिसे कोई माया-ममता नहीं, और जिसने अहंकार का त्याग किया है वही शांति प्राप्त कर सकता है।.

इसके अलावा अन्य श्लोको में कहा गया है उसके मुताबिक

→ जिसका अंत:करण स्वयं सचालित हो
→ जो राग-द्वेष से विमुक्त हो,
→ जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की हो,
→ वह अंत:करण की आध्यात्मिक प्रसन्नता को प्राप्त करता है।

शांति यानि

→ मान और मोह का नाश
→ आसक्ति से मुक्ति
→ महत्वकांक्षाओं का त्याग
→ सुख - दुःखरूपी द्रन्द्र से मुक्ति

इस प्रकार, मनुष्य इस प्रकार की स्थिति प्राप्त करें तो उसे शांति प्राप्त हो सकती है। यह बात जितनी व्यक्ति के लिए उपयोगी है उतनी ही विश्व के महापुरुषों के लिए उपयोगी है। हमें यहाँ विश्व शांति की बातों की चर्चा करनी है इसलिए विश्वशांति की संकल्पना को समझें ।

विश्वशांति यानि

→ विश्व की जनता की सभी प्रकार के भय से मुक्ति

→ बाह्य आक्रमणों से युक्ति

→ हिंसा के भय से मुक्ति

→ अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की बिना रुकावट प्राप्त करके स्व-विकास करके आनन्दपूर्वक जी सके ऐसी स्थिति ।

→ शांतिपूर्ण सह उस्तित्व

→ प्रेम, संप, सदाचार, सहकार इत्यादि मूल्यों का लोगो में आविष्कार सभी प्रकार के शोषण से मुक्ति ।

→ संक्षेप में, विश्व की जनता किसी भी प्रकार के भय बिना हिंसा से मुक्त, होकर अन्य लोगों के साथ सद्भाव और सहअस्तित्व की भावना से प्रसन्नतापूर्ण जी कर स्व-विकास कर सके ऐसी स्थिति यानि विश्व शांति ।

इस बारे में महंमद पयगंबर साहब को पूछे गये प्रश्न और उत्तर का चिंतन करने योग्य है। उन्हें पूछा गया कि दुर्गुण किसे कहते है जिसका उन्होंने उत्तर दिया, "जिसके कारण आपका मन और ह्रदय बेचन हो और आत्मा परितोष महेसूस करे वह दुर्गुण ।यह दुर्गुण एक मानसिक अशांति है। उन्होने सद्गुणों की परिभाषा देते हुए कहा है कि, "जिसके कारण मन में शांति उत्पन्न हो और आत्मा में शांति उत्पन्न हो उसे ही सद्गुण कह सकते है ।" यह सद्गुण शांति है । विश्व की समग्र जनता की आत्मा ठंडक को महेसूस करे और उसकी सभी प्रकार की बैचेनी दूर हो ऐसी परिस्थिति को शांति कह सकते है।

उसी प्रकार से उनका निर्माण होता है। छोटे बच्चों को ही यदि शिक्षा द्वारा शांति, सद्भाव, मानवता, भातृभाव जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाए और उन्हें सभी प्रकार के जनून मुक्त रखा जाए तो वे भविष्य में वयस्क नागरिक बनकर शांति का मूल्य समझ सकते है। इसके लिए शांति और सहअस्तित्व की शिक्षा उनको अभ्यास काल के दौरान दी जाए यह अति आवश्यक है। जिसके लिए निम्न रूप से भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों और कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।

१) अभ्यासक्रम द्वारा :-

शांति शिक्षा देने के लिए अभ्यासक्रम के कुछ विषयों के द्वारा प्रबंध करना चाहिए।

(१) साहित्य: साहित्य में विश्वशांति के चाहकों और समर्थकों के जीवन-चरित्रों,

आत्मकथांशो आदि सीखाना चाहिए।

(२) सामाजिक विज्ञान :- इतिहास में विश्व शांति के लिए झूझनेवाले लोगों के प्रयासों, स्वातंत्र्य की गतिविधियाँ, रंगध्वेष और कीमवाद खत्म करने के प्रयास, विभिन्न क्रान्तियाँ इत्यादि की शिक्षा देनी चाहिए ।

भूगोल की शिक्षा द्‌वारा विभिन्न जातियों के लोकजीवन, उनकी समस्याएँ, विभिन्न देशों का परस्परावलंबन उनकी संस्कृति, उनके रीति-रिवाजों की शिक्षा देनी चाहिए ।

नागरिकशास्त्र द्‌वारा विश्व नागरिक के अधिकारों और कर्तव्यों की शिक्षा देनी चाहिए।

(३) विज्ञान एवं गणित : विभिन्न वैज्ञानिकों ने संपूर्ण मानव जाति के कल्याण और सुख-सुविधाओं के लिए की गई खोजों का ज्ञान देना चाहिए । इन बि वैज्ञानिकों ने विश्व की प्रगति के पथ पर ले जाने की जी प्रयास किए हैं उसका ज्ञान देना चाहिए। इसी प्रकार गणितशास्त्रीओं के प्रदान को भी मद्‌देनजर रखना चाहिए। अभ्यासक्रम की नए दृष्टिकोण से निर्मित करना चाहिए।

१) सह अभ्यासिक प्रवृत्तियाँ :

१) प्रार्थना : पाठशाला में सर्वधर्म प्रार्थना आयोजित की जानी चाहिए, प्रार्थना में विश्वशांति के मंत्रो का उच्चारण होना चाहिए।

सहनाववतु, सहनौभुनक्तु, सहवीर्य, करवावहै

तेजस्विता, वधीतमस्तु, मा विद्‌विषावहे ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

पवित्र मंगलगान प्रतिदिन होना चाहिए ।

२) वार्तालाप और प्रवचन :

विश्व शांति के चाहक जैसे गांधीजी, मार्टिन ल्युथर कींग आदि के जीवन और कार्यो पर वार्तालाप का आयोजन किया जाना चाहिए ।

३) महापुरूषों की जन्मजयतियों को मनाना

बुद्‌ध, इसु, महंमद पयगंबर, गुरु नानक, कृष्ण, राम, गांधीजी इत्यादि महापुरुषों की जन्म जयंतियों को मनाना चाहिए।

४) विश्व युनो दिन की मनाना :

प्रति वर्ष २५ अक्टूबर को यूनो का स्थापना दिन मनाया जाता है। इस दिन युनी की स्थापना उसके कार्यो और विश्वशांति के प्रयासी आदि के बारे में बच्चों की जानकारी देनी चाहिए ।

५) अन्य देशों के स्वतंत्रला दिनों की मनाना :-

विश्व के अन्य देशों के स्वातंत्र्य दिनों को मनाना चाहिए । १५ अगस्त, २६ जनवरी जैसे हमारे राष्ट्रीय पर्वो को मनाना चाहिए । इसके अलावा ४ जुलाई- अमेरिका के स्वातंत्र्य दिन को भी मनना चाहिए ।

६) अंतराष्ट्रीय दिन को मनाना :-

भिन्न-भिन्न अंतराष्ट्रीय दिनों की मनाना चाहिए । विश्व मानव अधिकार दिन, विश्व स्वास्थ्य दिन, युनो दिन, पर्यावरण दिन, बाल दिन इत्यादि दिनों की मनाकर उनका महत्व समझाना चाहिए।

७) आंतर्राष्ट्रीय समाचार -

आंतराष्ट्रीय घटनाओं का योग्य तरस्पपूर्वक

विश्लेषण करके बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय वर्तमान घटनाओ से वाफिफ करना चाहिए।

८) हिरोशीमा दिन को मनाना :-

प्रतिवर्ष छह अगस्त को हिरोशीमा दिन के रूप में मनाया जाता है। हीरोशीमा के उपर अणुबम गिरने से अनेक निर्दोष मरि गए थे। इस दिन शांति का संदेश देने और यूध्ध की भयानकता को समझाने के लिए इस दिन की मनाना चाहिए।

९) प्रदर्शन :-

विभिन्न देशों के लोगों के लोकजीवन, रितरिवाजो आदि के बरि में प्रदर्शन आयोजित करने चाहिए । वियेटनाम, जापान, कोरिया जैसे युद्धग्रस्त देशों की युद्ध भयानकता को प्रदशनों को प्रदर्शित करते प्रदर्शनों को आयोजित करके विश्वशांति का संदेश पेश कर सकते हैं।

३.) अन्य उपाय:

(१) आंतर्राष्ट्रीय सप्ताह की मनाना
(२) पत्रमित्र मंडल की स्थापना
(३) कुदरती प्रकोपों के वक्त अन्य देशों को सहायता
(४) निष्णांतों के प्रवचन
(५) चर्चा सभाओं और शांति शिबिरो का आयोजन
(६) परदेश से आई हुई व्यक्ति की मुलक्रात

उपसंहार :-

हम सभी को शिक्षा के द्रारा शांति का संदेश बच्चों को देना चाहिए। डॉ. राधाकृष्णन के मतानुसार 'हमें जर्मन, अमेरिकन या रशियन ही सकते हैं लेकिन मुलभूत रूप से हम इंसान है । इस बुनियादी बात को कभी भूलना नहीं चाहिए । चलो हम एक विश्व समाज में

जी ने के ढंग सीखें। यही विश्वशांति की इच्छा रखते हुए मनुष्य का एक की उद्‌गार मंत्र हो सकता है।"

जगत में बसनेवाले सभी जीव सुखी हो, सब तंदुरस्त हो; सभी का कल्याण हो और उन्हे कभी भी दुःख न पहुँचे ।

विश्व जब आज तृतीय विश्वयुद्‌ध के किनारे पर आकर खड़ा है और नि:शस्त्रीकरण के खोखले वचनों के बीच शस्त्रों के गंज खड़े हो रहे हैं तब मानवजाति को युद्‌ध की अगनजवालाओं से बचाने के लिए शांति शिक्षा की अनिवार्य आवश्यकता है । मनुष्य उपग्रहों को छोड़ सकता है । किन्तु अन्य मनुष्यों के पूर्वग्रहों से मुकट नहीं हो सका है । इस संजोगों में मनुष्य जाति को पूर्वग्रहों, धिक्कार, नफरत की विनाशक आंधी से बचाने के लिए उसके पूर्वाग्रहों, धिक्कार और नफरत की वृत्ति को दूर करने के लिए शांति शिक्षा की आवश्यकता है।

- **संदर्भसूचि** :

→ रावल नदुभाई वी।, 'विकासमान भारतीय समाज में शिक्षक'
नीरव प्रकाशन, अहमदाबाद 1

→ दवे जयेन्द्र के। 'विकसित होते भारतीय समाज में शिक्षा और
शिक्षक', बी. एस. शाह प्रकाशन, अहमदाबाद ।

→ देसाई कृष्णन्त गो । ''अंतराष्ट्रीय समय के लिए शिक्षा'
गुजरात विश्वविद्‌यालय, अहमदाबाद।

→ दर्प जये शास्त्री, 'शिक्षादर्शन परिभाषा कोष'
सरदार पटेल विश्वविद्‌यालय, विद्‌यानगर ।

→ पांडेय रामशुक्ल, 'शिक्षादर्शन' (हिन्दी),
विनोद पुस्तक मन्दिर, आया।

→ Globle, Norman M., 'The changing Role of the teacher'
International Perspective, UNISECO, Paris.

Dr. Jaykar S. Mecwan
Associate Professor
N.H.Patel, College of Education
Bhalej road,
Anand -388001